ISSN:2583-8849



प्रह्लाद पारीक

D 93 आजाद नगर, भीलवाड़ा, राजस्थान

मुक्तक

1

मेरी प्रीत धवल हो जाए ।
नज़्म-ओ-गीत ग़ज़ल हो जाए ।
जुगनू के मरने से पहले -
रोशन दीप नवल हो जाए ॥

2

दीप कहे मन मत डर तू अँधियारो से ।
सीख मिलेगी जीवन में भी खारों से ।
सच्ची दीवाली तो तब है प्राण प्रिये!,
जब जीवन महकाए प्रेम फुहारों से ॥

3

दीप जले तो मन में ख़ास उजाला हो ।
मानवता का इक तू ही रखवाला हो।
घोर-घनेरा तिमिर झूठ का जब छाए _
सीने में हो आग आँख में ज्वाला हो।

4

दीप जले तो जीवन पथ रोशन होगा ।
तन आलोकित हो कर मन कुंदन होगा ।
दीपक आशाओं के जलते रहने दो -
जीवन में खुशियों का अभिनंदन होगा ॥